किलोल–2008
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र,सवाई माधोपुर
स्थान– उदय सामुदायिक पाठशाला,जगनपुरा

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के किलोल–2008 का आयोजन उदय सामुदायिक पाठशाला,जगनपुरा पर किया गया। इस कार्यक्रम में उदय पाठशाला बोदल,उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा और उदय सवाई माधोपुर ने भाग लिया, प्रत्येक वर्ष उदय जगनपुरा पर किलोल कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। इस वर्ष इस कार्यक्रम को 18व 19 जनवरी को होना तय किया गया। जिसके निम्न उद्देश्यों के साथ इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया–

- ❖ उदय पाठशालाओं में अपनायें जा रहे सीखने सिखानें के तरीकों व विषयों का प्रदर्शन तथा समुदाय व अन्य बाहरी लोगों को इससे परिचित करवाना।
- ❖ उदय के सभी बच्चों का एक साथ एक मंच पर खेल कूद कार्यक्रम।
- ❖ उदय के अलावा अन्य सरकारी व निजिशालाओं के बच्चों को उदय में होने वाली गतिविधियों के आनन्द की अनुभूति करवाना।

किलोल–2008 हेतु निम्न बजट का प्रस्ताव लिया गयाः–

यात्रा	–	2500.00
खाना	–	2500.00
टेंट	–	1500.00
विज्ञापन	–	2000.00
माइक	–	500.00
अन्य	–	1000.00
कुल	–	**10000.00**

आज 18/01/2008 को शाला स्थल की अलग सी रोनक नजर आ रही थी। सड़क से उतरकर चारदिवारी में घुसते ही सबसे पहले गेट से गुजरना पड़ता है यह दरवाजा तीन बड़ी–बड़ी बल्लियों से बनाया गया था तथा इस पर पत्तल से बनी कलाकृतियां लगी हुई थी। मैदान में चारों ओर कई रंगो की झण्डियां बांस की खरपच्चियों पर लगी हुई थी। एक तरफ फुटबॉल व क्रिकेट का मैदान बना हुआ था। इसके अलावा खो–खो, बॉलीबॉल, कबड्डी के मैदान बने हुए थे। बड़ा सा मैदान, सब तरफ कुछ न कुछ दिखाई दे रहा था। सामने की दिवार के सहारे ईंट के टुकड़े व पत्थर एक खास तरह के पैटर्न में ढेरियों में लगे हुए थे तथा दो खूंट उसी जगह पर जिन पर पत्थर रखकर मानव आकृति की तरह पेंट किया गया था। शाला के आठ कमरे गोलाकार रूप में बने हुए हैं तथा वे सभी पुताई किए हुए थे।बीच में बड़ा सा चोक जिसे लीपकर एक खास तरह की ग्रामीण चित्रकारी की गई थी।

18/01/2008 की शुरूआत बाल सभा से की गई इसमें बच्चों ने बालगीत गाए तथा इसके बाद स्कूल बच्चों द्वारा एक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। जिसमें एक लड़का व कुछ लड़कियां जो सिर पर मटकियां लिए हुए थी तथा गीत ''बंजारा नमक लाया'' पर नृत्य कर रही थी। गीत व नृत्य से लग रहा था कि बंजारे के नमक बेचने आने पर ग्रामीण महिलाओं की स्थिति उजागर हो रही थी इसके बाद कार्नर की शुरूआत हो गई।

विज्ञान कार्नर में रंजीता जी थी इस कार्नर में चारों तरफ प्रयोग व उसकी प्रक्रिया लिखी हुई थी। इस तरह 10 प्रयोग चार्ट पर लिखे हुए थे। तथा उसी के नीचे टेबल पर उस प्रयोग का पूरा सामान व्यवस्थित रखा

हुआ था। इन प्रयोगों में अन्य स्कूलों के बच्चे बहुत आश्चर्यचकित होकर प्रसन्नचित मुद्रा में भाग ले रहे थे। बच्चें तथा समुदाय के लोग भी इन प्रयोगों को कर के उत्साहित हो रहे थे। इस कोशिश को देखना गांव वालो को भा रहा था। इस कार्नर में उदय के बच्चे भी प्रयोग कर रहे थे लेकिन उनकी संख्या कम ही थी क्योंकि अधिकतर प्रयोग उनके किए हुए ही थे। ये सारे उनकी शिक्षण विधाओं में शामिल प्रयोग ही थे।

टी.एल.एम व सवाल–जवाब के कार्नर में वैनी प्रसाद जी थे इस कार्नर में गणित,अंग्रेजी,हिन्दी व पर्यावरण से सम्बंधित टी एल एम था। इसे चारो तरफ पिन बोर्ड पर डिसप्ले किया हुआ था। मूलतः टी. एल.एम तीन भागों में बंटा दिखाई दे रहा था पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व गणित का टी.एल.एम ।इस टी.एल. एम को दिवारों व टेबिलों पर प्रदर्शित किया गया था। एक कोने में संस्था की शैक्षिक नीतियों के बारें में बुकलेट रखी हुई थी। जिन्हे कोई भी आगन्तुक ले सकता था। पढ़कर सम्बंधित सवाल भी कर सकता था। इसमें समुदाय व बच्चों ने देखकर शिक्षण पद्धतियों को जानने की कोशिश की ।

चाक पर इसके पास ही खिलौने बनाये जा रहे थे। यहां बाबा (चाक पर संदर्भ व्यक्ति) व मानसिंह जी थे । बच्चों ने विभिन्न तरह के सामान चाक पर बनाए,समुदाय व मेहमानों ने भी चाक पर खिलौने बनाने का आनन्द उठाया।

Clay+Origamy कार्नर में सुनीता जी व मोहन लाल जी थे। इस कार्नर में बच्चों की सुन्दर–सुन्दर पेन्टिग लगी हुई थी तथा समुदाय की महिलाओं द्वारा बनाई गई पेन्टिग भी लगी हुई थी एक कोने में मिट्टी रखी हुई थी। जिससे बच्चे खिलौने बना रहे थे तथा एक तरफ बैठे बच्चे कागज की आकृतियां व कौलाज बना रहे थे। उन्हे कमरे में किसी के आने जाने का ध्यान नहीं था। कमरे में टेबिलों पर खिलौनों को पेंट करके रखा हुआ था इस प्रकार कार्नर अच्छा दिखाई दे रहा था।

फोटो कार्नर में वन्दना जी थी। इसमें उदय स्कूल के श ुरू से आज तक के इतिहास की साक्षी फोटोज को विकास के सही क्रम में ट्रेन के डिब्बों के रूप में सजाया गया था। इस कमरें में चारों तरफ फोटो ही फोटो लगी हुई थी कुछ पेन्टिग व कपड़े जिन पर कुछ लिखा हुआ था टंगे हुए थे।इस कमरे में भी सभी आ जा रहे थे।

फाटो कार्नर के पास ही Story Telling कार्नर था। इस कमरे की सजावट में मिट्टी की आकृतियां दिवारों पर उभारी गई थी तथा ऊपर ब्रह्माण्ड के 9 ग्रह व सूर्य को दिखाया गया था। लेकिन इसमें पृथ्वी को सूर्य के सबसे नजदीक दिखाया गया था। इसमें कहीं 3–4 टेबिल ऊपर नीचे थी तथा उपर से साड़ी का एक झूला गया हुआ था। कहानी कहने वाले बच्चे कई बार इस पर झूलते थे। इसमें बच्चे हाव भाव व म्यूजिक के साथ कहानी सुना रहे थे। इसके गेट पर पर्दा लगा हुआ था जिससे एक अलग तरह का शान्त माहौल लग रहा था तथा सभी बच्चे, समुदाय व मेहमान ध्यान से कहानी सुन रहे थे।

कारपेन्टरी में संदर्भ व्यक्ति रमेश जी थे। बच्चे इसमें कुछ काटने व कील ठोकने में व्यस्त थे। प्रत्येक बच्चा कुछ न कुछ बनाने में व्यस्त था तथा इस कमरे में लगातार आवाज आती रहीं क्योंकि बच्चे अपनी कोई न कोई गाड़ी अथवा अन्य सामान बना रहे थे।

कारपेन्टरी के पास ही पेन्टिग का कार्नर था। इसमें मीनू जी थी। इसमें बच्चे एकदम भरे हुए थे। उदय से ज्यादा सरकारी शालाओं के बच्चे अधिक दिखाई दे रहे थे क्योंकि उनका रंगों से खेलने का शायद यह पहला मौका था। जब उनके सामने बहुत सारे रंग हो, कागज हो और रंगने की पूरी आजादी हो तो वे इस मौके को कैसे छोड़ सकते थे। उस कमरे में पेन्टिग नही लगी हुई थी कुछ Rhyme तथा साड़ियों को बीच–बीच में लटकाया हुआ था। इसी में कुछ बच्चे पत्तियों आदि को पीसकर रंग भी बना रहे थे। बच्चें व बड़े पेन्टिग में इतने व्यस्त थे कि कोई बाहर जाना ही नही चाहता था इस कारण यहां भीड़ अधिक थी।

लाइब्रेरी कार्नर में बच्चों व बड़ो से सम्बंधित पुस्तके थी। इसमें उदय पाठशाला के बच्चे कम ही थे अन्य पाठशालाओं के बच्चे कहानियों की किताबे पढ़ रहे थे।

मैदान में खेल हो रहा था। खेल के दौरान वहां बहुत सी भीड़ दिखाई दे रही थी। इसी दौरान 500–600 लोग मैदान में रूचि ले रहे थे। खेल का कार्यक्रम निम्न था–

प्रथम दिन के खेलः–

कबड्डी	उदय पाठशाला,बोदल V/s उदय बोदल
कबड्डी	उदय जगनपुरा V/s उदय जगनपुरा
फुटबाल	उदय बोदल V/s उदय जगनपुरा

खो–खो	उदय बोदल V/s उदय बोदल
खो–खो	उदय जगनपुरा V/s उदय जगनपुरा
क्रिकेट	उदय बोदल V/s उदय जगनपुरा

दुसरे दिन के खेलः–

कबड्डी	उदय बोदल V/s उदय जगनपुरा
खो–खो	उदय V/s अन्यशालाओं के बच्चे
क्रिकेट	बोदल समुदाय V/s जगनपुरा समुदाय (युवा)

इस व्यस्त कार्यक्रम को लोग देखने में भी व्यस्त थे। उन्हे लग रहा था कि सभी गतिविधियों का लाभ उठाना चाहिए। इसीलिए लोग प्रत्येक गतिविधि को देखकर उसका आनन्द उठा रहे थे।

नाटक का मंचन :–

इस बार किलोल उत्सव–2008 की थीम नाटक थी। अतः इस बार नाटक की संख्या अधिक थी इसी कारण नाटक के मंचन के समय अन्य सभी गतिविधियों को बन्द रखा गया। निम्न नाटकों का मंचन हुआ–

1) एकलव्यः–

प्रथम दिन ही इस नाटक का मंचन हुआ। यह नाटक मूलतः गुरू द्रोणाचार्य व एकलव्य पर आधारित था। इसका निर्देशन राजकुमार रजक ने किया कलाकार मेघराज (छात्र) था। इसमें दिखाया गया था कि द्रोणाचार्य ने एक छात्र के साथ कितना अन्याय किया था और गुरू दक्षिणा के नाम पर अंगुठे को मांगे जाने पर एकलव्य का रोष दिखाया गया है। जिसमें एकलव्य ने बोर्ड पर लिखा ''यह कैसी गुरू दक्षिणा है'' तथा अपने सभी साज–बाज धनुष आदि तोड़कर फेंक देना गरू समाज तथा उसकी परम्परा पर अपना क्रोध दिखाता है।

इस नाटक को देखकर एक बार तो बहुत से लोग भावुक हो गए। इस नाटक से दर्शक इतने प्रभावित हुए कि शाम को दर्शकों ने एक बार फिर कहा कि एकलव्य का मंचन पुनः होना चाहिए। इस पर एकलव्य नाटक का पुनः मंचन हुआ।

2) तोते की कहानी (निर्देशक– सुकमल मैत्रा द्वारा)

इस नाटक का मंचन उदय सवाईमाधोपुर के बच्चों द्वारा किया गया। इस नाटक में आज की शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग किया गया है जिसमें बच्चों को एक मशीन की तरह पढाया जाता है। बच्चे की भावनाओं को कोई नहीं समझता है तथा सभी झूठी शिक्षा की ओर भाग रहे हैं।

3) चोर मचाए शोर

इस नाटक का मंचन उदय जगनपुरा के बच्चों द्वारा किया गया। यह एक मूक नाटक है जो कि नाम के विपरीत हैं।

4) प्रतिबिम्ब

यह नाटक उदय जगनपुरा के समुदाय के युवाओं द्वारा किया गया। इसमें किसानों की दशा पर व्यंग्य किया गया था । किसान पूरी मेहनत के बाद भी अपनी रोजी रोटी की व्यवस्था ठीक से नहीं कर पाते। अपनी ही जमीन में वे एक गुलाम की तरह हैं।

दूसरे दिन उदय बोदल के बच्चों द्वारा 'समय' नाटक का मंचन किया गया। जिसमें कुछ लोक गीतों को भी जगह दी गई। इस नाटक का निर्देशक सुकमल मैत्र द्वारा किया गया। इसके बाद उदय जगनपुरा के बच्चों द्वारा ''चार मित्र'' नाटक का मंचन किया गया। इसका निर्देशन एक छात्र अजय (उम्र 9 वर्ष) द्वारा किया गया था। इस नाटक में दिखाया गया कि जो एक दूसरे की सहायता करते हैं वे बड़ी कठिनाइयों को भी आसानी से पार कर जाते हैं।

सबसे अन्त में ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के शिक्षकों की टीम द्वारा ''चेहरे'' नाटक का मंचन किया गया। जिसमें दिखाई देता है, कि एक ही व्यक्ति के कितने चेहरे होते हैं। चोर को कोई चोर नही कहता है और भूख के कारण एक बच्चा कुछ फल ले लेता है, तो उसे फेरी वालों व अन्य लोगों द्वारा चोर साबित कर दिया जाता है उसे पीटा जाता है तथा गालियां दी जाती है लेकिन जब यह पता चलता है कि यह बच्चा कमीश्नर का बेटा है तो वही चोर बच्चा शरीफ व सज्जन बन जाता है। सरकारी तंत्र की पोल भी इस नाटक द्वारा खोली गई है जिसमें लोग एक दूसरे के घोटालों को दबाते हैं क्योंकि कहीं स्वयं का घोटाला उजागर न हो जाये।

इस प्रकार नाटक काफी प्रभावशाली रहे और सभी नाटकों को लोगों ने धैर्यपूर्वक देखा।

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र व समुदायः–

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र प्रत्येक वर्ष किलोल उत्सव का आयोजन करता है इसका एक बड़ा उद्देश्य समुदाय व आस पास के सरकारी व अन्य संस्थाओं को ग्रामीण शिक्षा केन्द्र से जोड़ना तथा इसकी गतिविधि व शैक्षणिक प्रक्रिया को समझाना भी रहा है। समुदाय प्रत्येक वर्ष गतिविधियों में अपनी रूचि को दिखाता जा रहा है और ग्रामीण शिक्षा केन्द्र से अधिक जुड़ाव होता जा रहा है।

- ❖ किलोल उत्सव 2008 की तैयारी में समुदाय के युवाओं ने भरपुर सहयोग दिया। इस तैयारी में दिन व रात युवा लड़के लगे रहे इस तैयारी हेतु कुछ लड़कों ने अपनी नौकरी से तीन दिन का अवकाश भी ले लिया।
- ❖ रात्रि 17/01/08 को समुदाय के युवा लड़कों द्वारा पूरे मैदान में खड्डे खोदकर झण्डियां लगाई गई, गेट लगाना व उसको सजाने का कार्य भी किया।
- ❖ आस–पास से सामान लाने ले जाने में भी समुदाय द्वारा भरपूर सहयोग दिया गया।
- ❖ इन युवा लड़कों ने अपना काम छोड़कर प्रतिबिम्ब नाटक की तैयारी स्कूल पर की जो काफी सफल रहा।
- ❖ समुदाय के लड़कों ने कार्नर को सजाने में भी आवश्यक मदद दी।
- ❖ पेन्टिग कार्नर, विज्ञान कार्नर में समुदाय के लड़कों ने कार्य सम्पादन में हमारी यथासम्भव सहायता की।
- ❖ पेन्टिग करते हुए कुछ सरकारी शालाओं के बच्चों द्वारा रंग,पेन्सिल आदि के ले जाने पर समुदाय से देशराज जी ने उन बच्चों से रंगों को वापिस मंगाने के लिए उन्हे जो भी तरीका उचित लगा उसी तरीके से आखिरकार रंगों को वापिस मंगवाकर ही दम लिया।यह घटना दर्शाती है कि समुदाय में स्कूल के प्रति कितना अपनापन है स्कूल आपसी रिश्तों से ऊपर है।
- ❖ इस बार किलोल उत्सव–2008 में 1500–1600 लोगों ने भाग लिया और इन गतिविधियों का आनन्द उठाया । इसमें 150–200 लोग बोदल से भी आये।
- ❖ बोदल से आये 120 बच्चे 15 महिलाओं तथा 30–40 समुदाय के युवा लड़कों व ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के शिक्षकों ने स्कूल पर ही रात्रि विश्राम किया।
- ❖ इस कार्यक्रम में महिलाओं ने भी हिस्सा लिया जिसमें जगनपुरा समुदाय की 15–20 महिलाएं व कुछ रांवल की महिलाओं ने भाग लिया।

❖ खाने की व्यवस्थाः–

बोदल से आये बच्चे तथा समुदाय व जगनपुरा स्कूल के बच्चों की खाने की व्यवस्था समुदाय द्वारा ही की गई। 18/01/2008 को दोपहर में खवा समुदाय द्वारा खाने की व्यवस्था की गई। सुरेश जी सैनी ने इसकी जिम्मेदारी लेते हुए अन्य लोगों को साथ में लेकर खाना तैयार किया। तथा स्कूल पर ही बच्चों को खाना खिलाया गया।

शाम का खाना छारोदा समुदाय द्वारा किया गया, जिसमें देशराज जी व भरतलाल जी ने इसकी मुख्य जिम्मेदारी ली। तथा खाना स्कूल पर ही बनाया गया एवं सभी बच्चों को बिठाकर समुदाय ने ही खाना खिलाया।

सुबह 19/01/2008 मालियों के टापरा समुदाय द्वारा नाश्ता करवाया गया तथा दोपहर को जगनपुरा समुदाय द्वारा खाना खिलाया गया। समुदाय ने स्कूल व बच्चों को अपने बच्चे की तरह ही समझा और यथासम्भव किसी भी सेवा के मौके को समुदाय ने हाथ से जाने नहीं दिया । किलोल 2008 से यह लगा कि लगातार समुदाय की स्कूल में रूचि बढ़ रही है।

प्रतिक्रियाएं :–

किलोल उत्सव–2008 में आस–पास व समुदाय ने ठीक संख्या में भाग लिया और सबकी प्रतिक्रियाएं साकारात्मक रही। सरकारी शालाओं के शिक्षकों ने इच्छा जताई कि ''हम इसे और देखना व समझना चाहते हैं, लेकिन हमारे पास समयाभाव के कारण ऐसा अभी संभव नहीं हो पाया। ये तरीके अच्छे हैं तथा सीखने में उपयोगी है।''

रांवल माध्यमिक स्कूल के प्रधानाध्यापक व सरपंच ने भी इस सभी प्रकार की गतिविधियों में रूचि दिखाई। अन्य एन.जी.ओ के लोगों ने भी इस कार्यक्रम की काफी सराहना की। दिल्ली से आए आनन्द जी व रानु जी ने सभी कार्नर को देखा व देखने के बाद स्वतः ही फुट पड़ा ''काश मेरे बच्चे भी इसी स्कूल में पढ़ते''

उदय सवाई माधोपुर में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों ने भी कार्यक्रम की काफी सराहना की। लायन्स क्लब से आये 30–40 लागों ने भी विभिन्न गतिविधियों का आनन्द उठाया तथा इन गतिविधियों से प्रभावित हुए बिना नही रह सके।